Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

मनीषा चाहर

शोधार्थी

डॉ. कमलेश सिंह

मार्गदर्शक,प्राचार्य (शिक्षाशास्त्र), जैन कॉलेज, ग्वालियर

सारांश

विद्यालय शिक्षा के केन्द्र बिन्दु हैं। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण विद्यालय की शिक्षा, शिक्षक एवं विद्यार्थियों को प्रभावित करता है। वातावरण का विशेषकर विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थी के जीवन पर गहरा और अमिट प्रभाव पड़ता है जो उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाता है। जैसा विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण होता है विद्यार्थियों को वैसी ही शिक्षा मिलती है, वैसी ही शैक्षिक उपलब्धियाँ हासिल होती हैं, शोधार्थी ने यह जानने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध में "वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें न्यादर्श का चयन शोधार्थी ने उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया है। न्यादर्श के रूप में 50 विद्यार्थी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एवं 50 विद्यार्थी अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के चयनित किए गए, इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु कक्षा-10वीं में प्राप्त अंकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाप विचलन एवं टी-परीक्षण का प्रशासन किया गया। शोध विश्लेषण में पाया गया कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से अधिक अच्छी है।

मुख्य शब्द: वित्तीय आधार, शासकीय, अशासकीय, विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण बालक/बालिकाओं के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों एवं व्यवस्थापकों द्वारा किया गया व्यवहार विद्यालय वातावरण को प्रभावित करता है। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे कठिन और नाजुक समय है। इस समय में शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं। इसमें अवश्य ही वह अच्छा-बुरा, धार्मिक-अधार्मिक, देश-प्रेमी या देश-नोदी, परोपकारी या अकर्मण्य, सत्य-असत्य, हित-अहित आदि बन सकता है। अतः विद्यालय को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय वातावरण का निर्माण करना चाहिए। विद्यालय संगठनात्मक वातावरण ऐसा होना चाहिए जो प्रतिकूलता उत्पन्न कर दे। विद्यार्थियों के चरित्र एवं उत्तम गुणों का विकास अच्छे वातावरण के साथ उन्नत समाज की ओर उच्च स्तर की शैक्षिक उपलब्धि हो।

विद्यालय संगठनात्मक वातावरण जितना उच्च कोटि का होगा उतने उच्च कोटि के गुण बालक में उत्पन्न होंगे, यथा-अनुशासन, दया, प्रेम, मर्यादा, संयम, स्वच्छता, सहयोग, नियमितता, आदर की भावना, समाज सेवा की भावना, साथियों से मित्रता की भावना, परिश्रमशीलता आदि गुणों का विकास संभव है। अतः विद्यालय संगठनात्मक वातावरण में ऐसे सभी उपायों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों को चहुँमुखी विकास हो सके। संगठनात्मक वातावरण हेतु विद्यालयों में ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम या आयोजन किया जाना चाहिए जिनको देखकर विद्यार्थियों के हृदय में दया, प्रेम, अनुशासन, सहयोग, भाईचारे की भावना, राष्ट्रीय भावना, मानव मात्र के प्रति कल्याण की भावना आदि के भाव विकसित हो सकें।

बच्चों को विद्यालय में अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है तो वे सही दिशा में प्रगति कर सकते हैं। विद्यालय का वातावरण बालक के व्यक्तित्व के विकास को इस सीमा तक प्रभावित करता है कि योग्य और होनहार बालक विद्यालय के अनुपयुक्त वातावरण के कारण समुचित विकास से वंचित हो जाते हैं। इसके विपरीत निम्न स्तर की योग्यता रखने वाले बच्चों को विद्यालय के अच्छे वातावरण द्वारा उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि बालक की योग्यता और क्षमता कैसी भी हो, विद्यालय का वातावरण जैसा होगा बालक के व्यक्तित्व का विकास भी उसी के अनुरूप होगा। विद्यालय का अच्छा वातावरण बालक के लिए सीखने की अनुकूल स्थितियाँ उपलब्ध करता है। विद्यालय का वातावरण ऐसा कारक है जो विद्यार्थियों को प्रभावित

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

करता है और उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन लाता है। बच्चों के भविष्य की नींव घर या परिवार में रखी जाती है। विद्यालय में शिक्षक द्वारा उसे अनुकूल बनाकर उस पर विकास का भवन निर्मित किया जाता है।

शिक्षा का उद्देश्य है कि विद्यालय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों का नैतिक स्तर ऊँचा हो, सभी विद्यार्थी संवेदनशील एवं स्वस्थ बनें व शारीरिक रूप से स्वस्थ और सामाजिक रूप से व्यवस्थित हों ताकि वे नागरिक, सामाजिक और मानवीय जीवन में अपनी भूमिका का सफल निर्वहन कर सकें। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। विद्यालय का वातावरण अनुकूल परिस्थितियाँ एवं स्वस्थ मानवीय संबंधों के निर्माण में सहायक होता है। शिक्षक इस वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ परिस्थितियाँ तथा आस-पास के वातावरण का प्रभाव भी बच्चों के विकास पर पड़ता है। विद्यालय का वातावरण उस स्थिति को सुनिश्चित करता है जिसमें बालक अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सके। शिक्षक अपने प्रयासों, उचित निर्देशन और व्यवहार द्वारा छात्र-छात्राओं के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। विद्यालय में शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार, स्नेह का वातावरण एवं कार्य के प्रति रुचि बालक के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती है। बालक का मानसिक स्वास्थ्य उसके शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित होता है। विद्यालय में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का होना भी आवश्यक है। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण ऐसा हो कि सुव्यवस्थित ढंग से छात्र-छात्राओं में अनुशासन की प्रवृत्ति सुदृढ़ रूप से विकसित हो। शिक्षक का सुनियोजित निर्देशन छात्र-छात्राओं में अध्ययन के प्रति रुचि जागृत करने तथा उनके व्यवहार में संतुलन लाने में सहायक होता है। विद्यालय का उद्देश्य बच्चों के लिए नैतिक, शैक्षिक, मानसिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का निर्माण करना है जिससे वे विद्यालय के प्रति आकर्षित हों और सीखने के लिए प्रेरित हों।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि में दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं – 'शैक्षिक' शब्द का आशय ज्ञान एवं कौशल से है तथा 'उपलब्धि' का अर्थ अर्जन या प्राप्ति से है। इस प्रकार ज्ञान एवं कौशल की जो भी प्राप्ति की जाती है उसे शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। छात्रों की उपलब्धि के क्षेत्र विविध होते हैं – जैसे शैक्षिक, बौद्धिक, रचनात्मक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि। शिक्षा के क्षेत्र में जो

अर्जन या प्राप्ति की जाती है वही शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। विद्यार्थियों में अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं और वे अलग-अलग विषयों का ज्ञान भिन्न-भिन्न स्तरों पर अर्जित करते हैं। अतः किसी भी विषय में विद्यार्थियों ने कितना ज्ञान अर्जित किया है, इसकी जाँच करना आवश्यक होता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि हेतु विभिन्न परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। इन परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार का मापन किया जाता है। परीक्षा के प्राप्त परिणामों का आधार यह दर्शाता है कि अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों ने किस स्तर तक अर्जित की है। प्राप्त परिणामों के आधार पर उन्हें कक्षा में उन्नत या अनुत्तीर्ण किया जाता है तथा उन्नति के कई श्रेणी जैसे – प्रथम, द्वितीय (मध्यम), तृतीय (निम्न) आदि निर्धारित की जाती हैं। इसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को सरकार की तरफ से शिक्षकों के वेतन के साथ-साथ अन्य संसाधन हेतु सम्पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है जबकि अशासकीय विद्यालयों को सरकार नियमानुसार संचालन हेतु अनुमति प्रदान करती है, उनके समस्त व्यय निजी संगठन या समिति द्वारा किए जाते हैं। शोधार्थिनी की यह जिज्ञासा हुई कि उक्त दोनों विद्यालयों में कौन से विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक अच्छा प्रभाव पड़ता है, अतः उक्त विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी हेतु यह अध्ययन करने का निश्चय किया गया।

समस्या कथन

"वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।"

वित्तीय आधार पर वर्गीकरण का आधार शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से है।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

ऐसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिनमें शिक्षकों का व्ययांश सरकार वहन करती है एवं अन्य समस्त संसाधनों का व्यय सरकार उठाती है।

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

ऐसे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिनका समस्त व्यय निजी संगठन वहन करते हैं। सरकार इन्हें केवल संचालन की अनुमति प्रदान करती है।

शैक्षिक उपलब्धि

कक्षा–10वीं के समस्त विषयों के प्राप्तांकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि का आधार माना गया है।

शोध के उद्देश्य

- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- **H_{01}:** ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- **H_{02}:** ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- **H_{03}:** ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- **H_{04}:** ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- **H_{05}:** ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रमुख चर

स्वतंत्र चर: उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण।

आश्रित चर: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। कक्षा–10 के कुल प्राप्तांकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि का आधार मानकर अध्ययन किया गया है।

शोध नमूना (न्यादर्श)

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने ग्वालियर नगर के 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का चयन किया।

न्यादर्श सारणी

विद्यालय का प्रकार	**विद्यालयों की संख्या**	**छात्र**	**छात्राएँ**	**कुल विद्यार्थी**
शासकीय उ.मा. विद्यालय	10	25	25	50
अशासकीय उ.मा. विद्यालय	10	25	25	50
योग	20	50	50	100

परिसीमन

- प्रस्तुत शोध ग्वालियर नगर तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध में ग्वालियर नगर के 10 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं 10 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में कक्षा-11वीं के 100 विद्यार्थियों को ही चुना गया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- **शोध न्यादर्श**

  प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं की जाँच हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

  परिकल्पनाओं का परीक्षण

  H_{01}: ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

  सारणी क्रमांक–1

  ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यम, मानक विचलन एवं 't' का मान

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यम (M)	मानक विचलन (SD)	t मान	निष्कर्ष
शासकीय उ.मा. विद्यालय	50	62.05	18.14	4.05	
अशासकीय उ.मा. विद्यालय	50	76.85	12.21	4.05	H_{01} अस्वीकृत

स्वतंत्रय (d.f.) = $(N_1-1) + (N_2-1) = (50-1) + (50-1) = 49 + 49 =$ **98**

0.05 स्तर पर t का सारणी मान = 1.98, 0.01 स्तर पर t का सारणी मान = 2.63

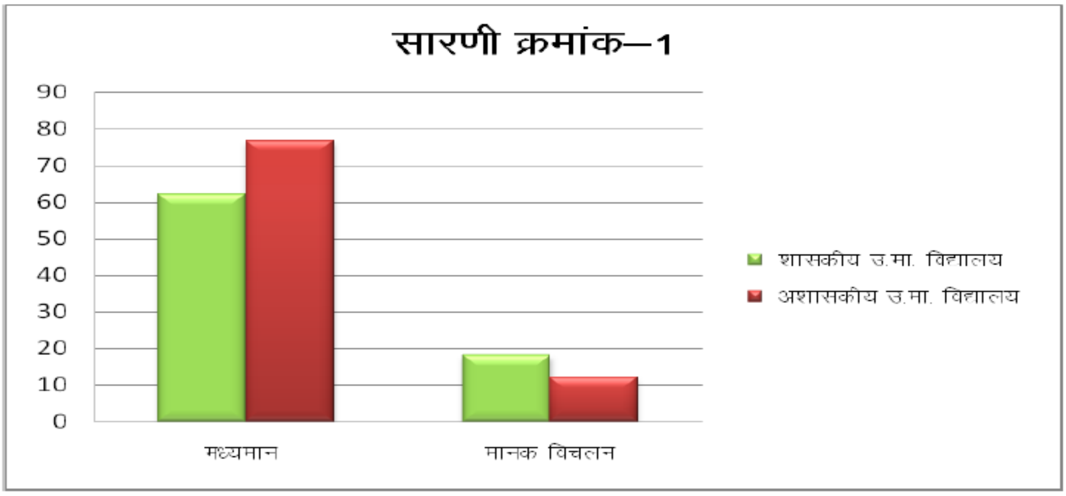

व्याख्या एवं विश्लेषण

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 62.05 एवं मानक विचलन 18.14 है तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.85 एवं मानक विचलन 12.21 है। चूँकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वतंत्रय (d.f.) 98 पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.63 है जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 4.05 है जो कि दोनों स्तरों पर विश्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि 't' का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

H_{02}: ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक–2

ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' का मान

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	t मान	निष्कर्ष
छात्र	25	73.20	10.71		
छात्राएँ	25	76.00	12.21	1.17	असार्थक (H_{02} स्वीकृत)

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों का मध्यमान 73.20 एवं मानक विचलन 10.71 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 76.00 एवं मानक विचलन

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

12.21 है। यद्यपि छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा थोड़ा अधिक है, तथापि गणना से प्राप्त 't' का मान 1.17 है, जो 0.05 स्तर (2.01) तथा 0.01 स्तर (2.68) दोनों के सारणी मान से कम है।

अतः मध्यमानों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{02}) स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

स्वतंत्रय (d.f.) = $(N_1-1) + (N_2-1) = (25-1) + (25-1) = 24 + 24 = 48$

0.05 स्तर पर t का अपेक्षित मान = 2.01,0.01 स्तर पर t का अपेक्षित मान = 2.68

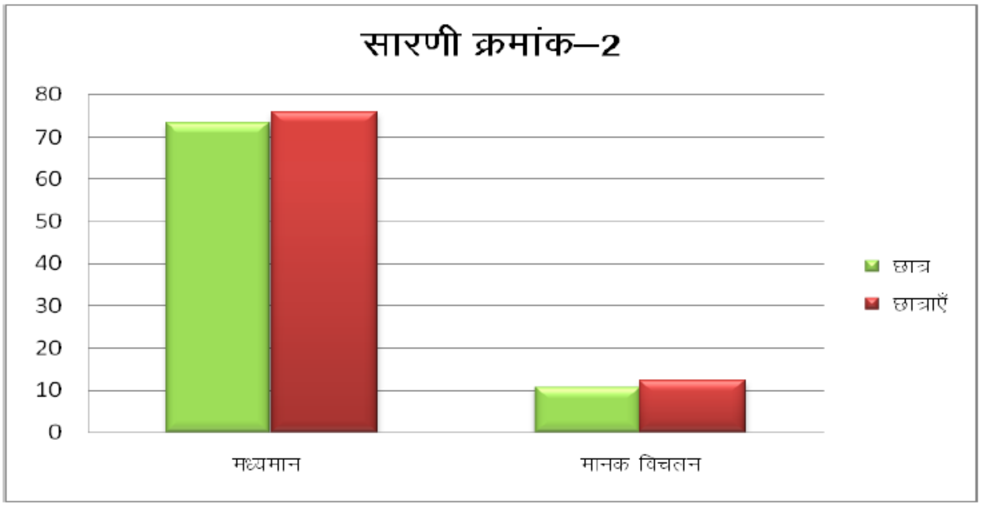

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 73.20 एवं मानक विचलन 10.17 है तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.00 एवं मानक विचलन 12.21 है। चूँकि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वतंत्रय (d.f.) 48 पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 1.17 है जो कि दोनों स्तरों पर

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

विश्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर असार्थक है। चूँकि 't' का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

H_{03}: ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक–3

ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' का मान

समूह	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	t मान	निष्कर्ष
छात्र	25	74.64	11.51		
छात्राएँ	25	76.53	12.23	0.61	असार्थक (H_{03} स्वीकृत)

स्वतंत्रय (d.f.) = (25−1) + (25−1) = 24 + 24 = 48

0.05 स्तर पर t का सारणी मान = 2.01,0.01 स्तर पर t का सारणी मान = 2.68

निष्कर्ष

गणना से प्राप्त 't' का मान 0.61 है, जो 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों के सारणी मान से कम है। अतः दोनों स्तरों पर अंतर असार्थक है।

इस प्रकार निष्कर्ष निकाला जाता है कि ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा शून्य परिकल्पना (H_{03}) स्वीकृत की जाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

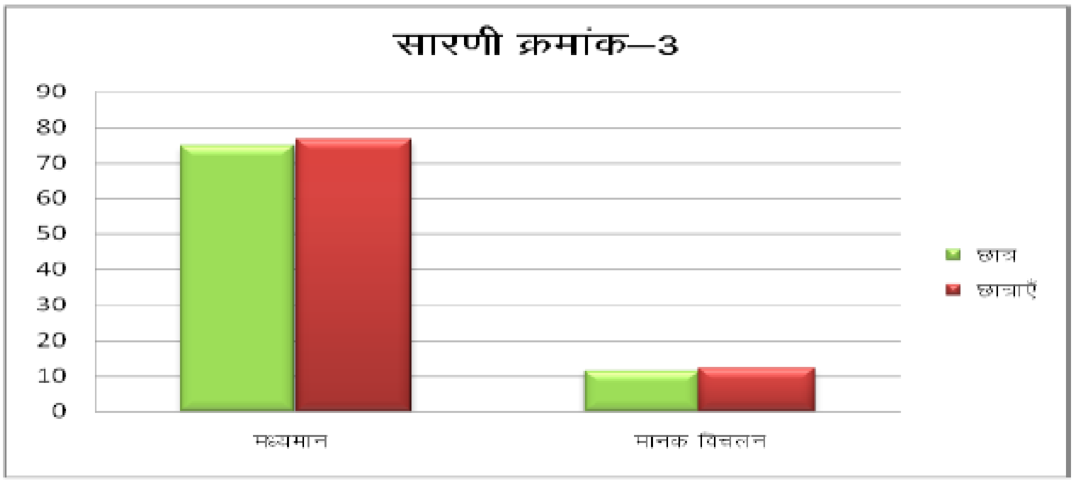

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 74.64 एवं मानक विचलन 11.51 है तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 76.53 एवं मानक विचलन 12.23 है। चूँकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वतंत्रय (d.f.) 48 पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.61 है जो कि दोनों स्तरों पर विश्वास मानों से कम है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर असार्थक है। चूँकि 't' का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04}:

ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सारणी क्रमांक–4

ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' का मान

समूह	छात्रों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	t मान	निष्कर्ष
शासकीय उ.मा. विद्यालय	25	72.00	4.00		
अशासकीय उ.मा. विद्यालय	25	74.00	6.00	5.09	सार्थक (H_{04} अस्वीकृत)

स्वतंत्रय (d.f.) = (25–1) + (25–1) = 24 + 24 = 48

0.05 स्तर पर t का सारणी मान = 2.01

0.01 स्तर पर t का सारणी मान = 2.68

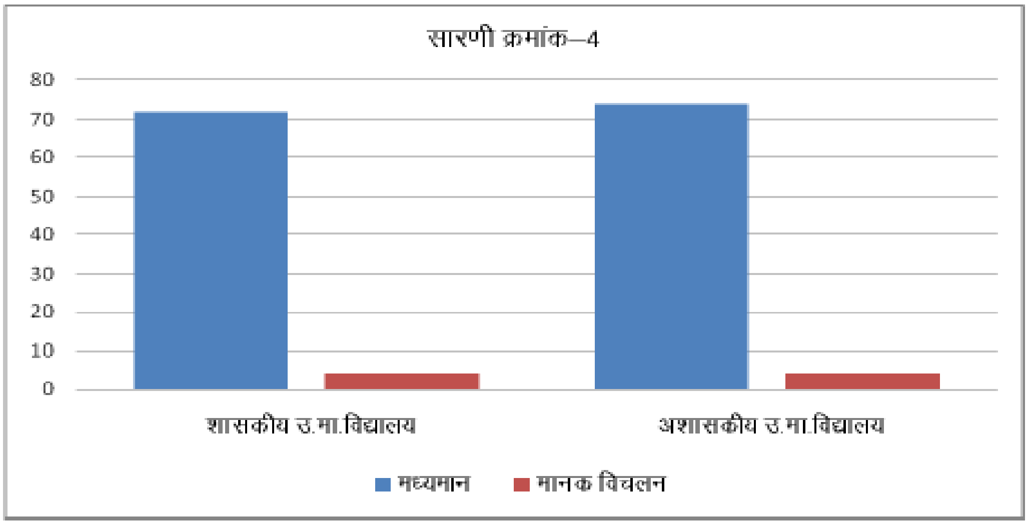

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 72.00 एवं मानक विचलन 4.00 है तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 74.00 एवं मानक विचलन 6.00 है। चूँकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

मध्यमान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है। स्वतंत्रय (d.f.) 48 पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 5.09 है जो कि दोनों स्तरों पर विश्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि 't' का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

H_{05}:

ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक–5

ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 't' का मान

समूह	**छात्राओं की संख्या (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक विचलन (SD)**	**t मान**	**निष्कर्ष**
शासकीय उ.मा. विद्यालय	25	62.63	15.03		
अशासकीय उ.मा. विद्यालय	25	75.78	16.73	5.06	सार्थक (H_{05} अस्वीकृत)

स्वतंत्रय (d.f.) = (25–1) + (25–1) = 24 + 24 = 48

0.05 स्तर पर t का सारणी मान = 2.01 ,0.01 स्तर पर t का सारणी मान = 2.68

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

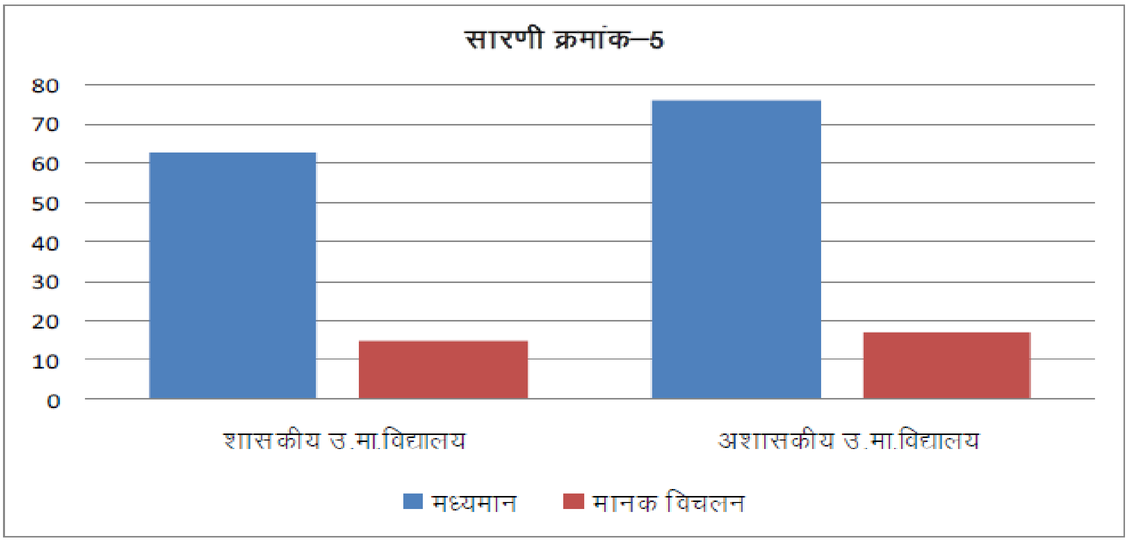

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 62.63 एवं मानक विचलन 15.03 है तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 75.78 एवं मानक विचलन 16.73 है। चूँकि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। अतः अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च है।

स्वतंत्रय (d.f.) 48 पर सार्थकता के लिए 't' का मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.01 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर 2.68 है जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 5.06 है जो कि दोनों स्तरों पर विश्वास मानों से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर मध्यमानों का अन्तर सार्थक है। चूँकि 't' का गणना से प्राप्त मान तालिका मान से कम होने पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है और अधिक होने पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात् ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- ग्वालियर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

- ग्वालियर शहर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक अच्छी है।
- ग्वालियर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक अच्छी है।

उपर्युक्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि ग्वालियर नगर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च कोटि की है। इसके प्रमुख कारण शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव, मूलभूत सुविधाओं की कमी, सरकारी नीतियाँ, शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यभार, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि हैं। उक्त कारणों से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने हेतु सुझाव

ग्वालियर नगर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च कोटि की हो सके, इस हेतु निम्नलिखित सुझाव हैं –

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को दूर करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का अतिरिक्त कार्यभार कम करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- शिक्षक अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें जिस प्रकार अपने परिवार के प्रति कर्तव्यों का पालन करते हैं तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा उपयुक्त शिक्षण विधि एवं तकनीकी का प्रयोग करके शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों द्वारा शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।

- शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उच्चकोटि की बना सकते हैं।
- शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन विद्यार्थियों को गृह कार्य देकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है।
- शिक्षकों का व्यवहार एवं रुचिकर ढंग से अध्यापन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि कर सकता है।
- पालकों द्वारा अपने बच्चों को गृहकार्य प्रतिदिन ध्यान से देखा जाय तो शैक्षिक उपलब्धि में अवश्य वृद्धि होती है।
- पालक अपने बच्चों की दैनिक गतिविधियों पर यदि ध्यान दें तो शैक्षिक उपलब्धि में सुधार अवश्य होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गुप्ता, एस.पी. (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्या, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद।
- आहूजा, राम (2007), सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, दिल्ली।
- रायजादा, बी.एस. (1997), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्त्व, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- सुखिया, एस.पी. (1998), शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- खान, प्रो. एस.एच. एवं श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987), अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन, NCERT, नई दिल्ली।
- स्मिथ, एल.डी. (2000), विद्यालय वातावरण और शिक्षक प्रतिबद्धता, मथुरा प्रकाशन, मथुरा।
- शर्मा, आर.एस. (2002), विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन संगठनात्मक विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सक्सेना, ओबेराय (2010), शिक्षा तकनीकी के तत्त्व एवं प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- भटनागर, आरती एवं अग्रवाल विद्या (2009), शैक्षिक प्रशासन संगठनात्मक विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।